63

भाग 4 (14:1–15:13):

''उसके पदचिह्नों पर''

(15:1–13)

1896 में चार्ल्स शैल्डन ने एक धार्मिक नावल लिखा, जो *इन हिज़ स्टैप्स* के नाम से एक शानदार साहित्य बन गया।[1] इस पुस्तक का शीर्षक 1 पतरस 2:21 से लिया गया था: ''और तुम इसी के लिए बुलाए भी गए हो, क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिए दुख उठाकर तुम्हें एक आदर्श दे गया है कि तुम भी उसके *पदचिह्नों पर* चलो।'' यह पुस्तक एक मण्डली के सभी सदस्यों द्वारा कोई भी निर्णय लेने से पूर्व यह पूछने के लिए कि ''यीशु क्या करता?'' ली जाने वाली शपथ की कहानी है।[2]

समस्याओं का सामना करने पर ''यीशु क्या करता?'' पूछने का महत्व है, परन्तु हम पक्का नहीं बता सकते कि यीशु हर परिस्थिति में क्या करता। विचाराधीन मांस खाने के प्रश्न में हम जान *सकते हैं*। रोमियों 15:1–13 में पौलुस ने हमें *बताया* कि यीशु क्या करता। ध्यान से देखें कि हमारे वचन पाठ में यीशु का हवाला कहां–कहां आया है। उसका उल्लेख लगभग हर आयत में है और उसके उदाहरण पर विशेष ध्यान दिया गया है। उदाहरण के लिए, 3 और 7 आयतों को देखें: ''मसीह ने अपने आपको प्रसन्न नहीं किया''; ''जैसा मसीह ने ... तुम्हें ग्रहण किया है, वैसे ही तुम भी एक–दूसरे को ग्रहण करो।'' एक अर्थ में पौलुस ने कहा कि ''इस मामले में, यीशु के पदचिह्नों पर चलो।'' पाठ में आगे चलकर अपने आप से पूछें, ''अन्य मसीही लोगों के साथ अपने सम्बन्धों में *क्या* मैं यीशु के पदचिह्नों पर चल रहा हूं?''

दूसरों को प्रसन्न करें (15:1-6)

क्योंकि दूसरों को इसकी आवश्यकता है (आयतें 1, 2)

यह संकेत देते हुए कि पौलुस विचार के मामलों पर अध्याय 14 से अपने विचारों को आगे जारी रख रहा था, अध्याय 15 का आरम्भ, ''अत:'' शब्द से होता है। उसने कहा, ''अत: हम बलवानों को चाहिए कि निर्बलों की निर्बलताओं को सहें'' (आयत 1क)। ''बलवान'' वे लोग थे, जिन्हें इस बात की समझ थी कि मांस खाना ग्रहण योग्य है और पौलुस ने अपने आपको इस समूह से मिलाते हुए कहा, ''*हम* बलवानों को चाहिए।''

14:1–4 की अपनी चर्चा में हमने देखा कि पौलुस ने ''बलवानों'' पर अधिक ज़िम्मेदारी डाली। शायद उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि ''बलवानों'' के लिए ''निर्बलों'' की अपेक्षा अपने विवेक को ठोकर दिए बिना बदलना आसान है। ''चाहिए'' शब्द का अनुवाद *opheilo* से किया गया है, जिसका अर्थ है ''देनदार होना।''[3] इसका अर्थ उसके लिए भी है जो दिया जाता है, जैसे *कर्ज़*। NASB में 1:14 और 8:12 में इस ''जिम्मेदारी वाले'' शब्द के रूप मिलते हैं।[4] पौलुस इस

बात पर ज़ोर दे रहा था कि उसके द्वारा दी गई ज़िम्मेदारी की रूपरेखा वैकल्पिक नहीं थी। यदि कोई ''बलवान'' आदमी प्रभु की आज्ञा को मानना चाहे, तो उसे वही करना आवश्यक *था,* जो उसने कहा है।

''बलवान'' लोग ''निर्बल'' लोगों के देनदार किस बात में होते हैं? पहले तो, ''बिना सामर्थ वाले लोगों की निर्बलताओं को सहने के लिए।'' संदर्भ में ''सहना'' (*bastazo* से) का अर्थ ''सहारना'' (बर्दाश्त करना) नहीं, बल्कि '' 'ले जाने, समर्थ करने' के अर्थ में'' सहना है[5] (देखें गलातियों 6:2)। मैं अपने मन में अपने दामाद डैन को अपने छोटे नीति एलाइजा का हाथ पकड़े, उसे सीढ़ियां उतरना सिखाते और यह सुनिश्चित करते देखता हूं कि कहीं वह गिर न पड़े। मैं बड़े बच्चों को अपने बुज़ुर्ग माता-पिता का हाथ थामे, उन्हें गिरजा घर में आने में सहायता करते देखता हूं। बलवान लोग अपने आप को प्रसन्न करते रहने के बजाय निर्बलों के लिए यही करते हैं (आयत 1ख)।

कुछ लोग अपने आप को ''बलवान'' समझते हैं, वे उन लोगों के साथ धैर्य खो देते हैं, जिन्हें वे ''निर्बल'' कहते हैं। उन्हें लगता है कि ''निर्बल'' लोग उन्हें पीछे करके उन्हें धीमा कर देते हैं। जो सचमुच में मज़बूत हैं, उन्हें इस बात की समझ है कि परमेश्वर ने उन्हें उन लोगों की सहायता करने की शक्ति दी है, जो उनकी तरह मज़बूत नहीं हैं। वे निर्बल भाइयों के साथ अपने आप को मिलाते हैं।

''बलवानों'' पर ''निर्बल'' का एक और कर्ज़ है। पौलुस ने कहा कि जो लोग ''मज़बूत'' हैं, उन्हें चाहिए कि केवल ''अपने आप को ही प्रसन्न न करें।'' मानवीय गुणों की सबसे बड़ी बात अपने आपको प्रसन्न करने की इच्छा करना है, जैसे वह खाना जिसे कोई खाना चाहता हो, वहां जाना जहां कोई जाना चाहता हो, वह करना जो वह करना चाहता हो। सांसारिक सोच वाले लोगों का लक्ष्य अपने आप को प्रसन्न करने के लिए जो भी करना पड़े वह करना हो सकता है, परन्तु यह उन लोगों का लक्ष्य नहीं होना चाहिए, जिन्हें पौलुस ने ''बलवान'' का नाम दिया। बलवानों को कई बार दूसरों की भलाई के लिए व्यक्तिगत आनन्द को त्यागना पड़ता है। एक बच्चा आधी रात को चिल्लाता है तो क्या माता-पिता उसे नज़रअंदाज़ करके यूं ही सो जाएंगे? नहीं यदि वे अच्छे माता-पिता हैं तो नहीं सोएंगे। वे अपने आनन्द (रात की अच्छी नींद) को त्याग देते हैं और बच्चे की आवश्यकताओं का ध्यान रखने के लिए जाग जाते हैं। निर्बलों के लिए बलवान यही करते हैं।

क्या इसका अर्थ यह है कि हम ऐसी कोई बात *न* करें जिससे हमें व्यक्तिगत आनन्द मिलता हो? नहीं, बल्कि इसका अर्थ है कि हमें वह करने पर ज़ोर देना आवश्यक नहीं है जो *हम* दूसरों की आवश्यकताओं पर विचार किए बिना करना चाहते हैं। इसका अर्थ यह है कि हम पूछेंगे कि ''मेरा व्यक्तिगत आनन्द ढूंढ़ना दूसरों को कैसे प्रभावित करेगा?''

पौलुस ने इसे इस प्रकार कहा: ''हम में से हर एक अपने ... पड़ोसी को प्रसन्न करे।'' (आयत 2)। इस वचन में ''पड़ोसी'' का अर्थ ''निर्बल'' भाई है।[6] अपेक्षित परिणाम क्या है? ''हम में से हर एक अपने पड़ोसी को उसकी भलाई के लिए *सुधारने के निमित्त* प्रसन्न करे'' (आयत 2)। ''भलाई'' (*agathos*) का सम्बन्ध आत्मिक भलाई से है। ''सुधारने'' का शब्द *oikodome* से लिया गया है, जिसका अनुवाद 14:19 में ''सुधार'' हुआ है। हमें अपने साथी

मसीही लोगों की भलाई के विषय में नि:स्वार्थ और चिन्तित होना चाहिए। AB में ऐसे भाई के सुधार के विचार को इस प्रकार व्यक्त किया गया है: ''उसे आत्मिक रूप से मज़बूत करना और बनाना।'' JB में कहा गया है कि हमें ''['निर्बलों'] को मज़बूत मसीही बनने में सहायता करनी चाहिए।''[7]

हमें ध्यान देना चाहिए कि ''दूसरों को प्रसन्न करने'' और ''मनुष्यों को प्रसन्न करने'' में अन्तर है। पौलुस सब को समझाना चाहता था कि वह मनुष्यों को प्रसन्न करने वाला *नहीं* है। गलातिया में मसीही लोगों के नाम उसने लिखा, ''अब मैं क्या मनुष्यों को मनाता हूं या परमेश्वर को? क्या मैं मनुष्यों को प्रसन्न करना चाहता हूं? यदि मैं अब तक मनुष्यों को प्रसन्न करता रहता, तो मसीह का दास न होता'' (गलातियों 1:10)। साथ ही उसने दूसरों को प्रसन्न करने की कोशिश *की* उसने लिखा, ''मैं ... सब बातों में सब को प्रसन्न रखता हूं, और अपना नहीं, परन्तु बहुतों का लाभ ढूंढ़ता हूं, कि वे उद्धार पाएं'' (1 कुरिन्थियों 10:33)। इन दोनों में क्या अन्तर है? ''मनुष्यों को प्रसन्न करने वाला'' वह व्यक्ति होता है, जिसका मुख्य लक्ष्य दूसरों से स्वीकृति पाना होता है, चाहे इसके लिए चापलूसी और गलती से समझौते का सहारा ही क्यों न लेना पड़े। इसके विपरीत ''मनुष्यों को प्रसन्न करने'' का अर्थ जहां तक हो सके सच्चाई के साथ बिना समझौता किए दूसरों की आत्मिक आवश्यकताओं से अपनी प्राथमिकताओं से पहल देना है।

क्योंकि मसीह ने ऐसा किया (आयतें 3, 4)

हमें इतना नि:स्वार्थ क्यों होना चाहिए? क्योंकि यीशु भी था: ''क्योंकि मसीह ने अपने आपको प्रसन्न नहीं किया'' (आयत 3क)। मसीह का मुख्य उद्देश्य अपने पिता को प्रसन्न करना था। उसने कहा, ''मैं सर्वदा वही काम करता हूं, जिस से वह प्रसन्न होता है'' (यूहन्ना 8:29)। परन्तु इस में बहुत नज़दीक से अपने व्यक्तिगत सुख और आनन्द को मनुष्यजाति की भलाई और सुधार के लिए छोड़ देने की उसकी इच्छा जुड़ी थी (देखें फिलिप्पियों 2:6-8)।

जैसा कि वह आमतौर पर करता था। पौलुस ने इस चर्चा के पुराने नियम का एक उपयुक्त हवाला जोड़ दिया, ''पर जैसा लिखा है, तेरे निन्दकों की निन्दा मुझ पर आ पड़ी'' (रोमियों 15:3ख)। यह उद्धरण भजन संहिता 69:9 से लिया गया है। उस भजन में दाऊद ने यहोवा के पीछे चलने के कारण उसके साथ होने वाले दुर्व्यवहार को स्मरण किया, ''तेरे [परमेश्वर के] निन्दकों की निंदा [''अपमान''; NIV] मुझ [दाऊद] पर आ पड़ी।'' परमेश्वर की प्रेरणा पाए मसीही शिक्षकों तथा प्रचारकों में भजन संहिता में यीशु की परछाईं अर्थात ''दाऊद के पुत्र'' को देखा (मत्ती 1:1)।[8] पौलुस ने इस वचन का इस्तेमाल यह संकेत देने के लिए किया कि पृथ्वी पर परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए मसीहा के आने पर उसके साथ दुर्व्यवहार किया जाएगा। MSG में इस विचार को इस प्रकार कहा गया है: ''जब यीशु आया, तो उसने दुखी लोगों के दुख ले लिए।'' अभिप्राय यह है कि मुझे और आप को वही करना है। मसीह हमारा आदर्श और उद्देश्य दोनों है।[9]

आयत 4 में पौलुस पुराने नियम के अपने इस्तेमाल के बचाव के लिए रुका। रोमियों के अपने पुस्तक अध्ययन में हमने बार-बार अपनी शिक्षा की दृढ़ता, पुष्टि या समझाने के लिए पुराने नियम को उद्धृत किया। रोमियों 15:3-12 में पौलुस ने पुराने नियम के भजन संहिता 69 से उद्धृत किया, बल्कि पुराने नियम के अन्य चार वचनों की भी बात की। आयत 4 ज़ोर देती है कि उसने ऐसा

करके सही किया: ''जितनी बातें पहिले से लिखी गईं, वे हमारी ही शिक्षा के लिए लिखी गई हैं कि हम धीरज और पवित्र शास्त्र के प्रोत्साहन के द्वारा आशा रखें।''

''जितनी बातें पहले से लिखी गईं'' का संकेत उसी की ओर है, जिसे हम पुराना नियम कहते हैं। अध्याय 7 में पौलुस ने कहा कि ''जिसके बन्धन में हम थे उसके लिए मरकर, अब व्यवस्था से छूट गए'' (आयत 6)। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि मसीही व्यक्ति के लिए पुराने नियम का कोई अर्थ नहीं है। पौलुस के अनुसार पुराना नियम ''हमारी ही शिक्षा के लिए लिखा गया था।'' नये नियम को समझने और सराहने के लिए हमें पुराने नियम से परिचित होना आवश्यक है।[10]

पुराने नियम से एक सबक हम ''धीरज'' (''सहनशीलता''; NIV) के महत्व को समझते हैं। वचन बताता है कि ''किस प्रकार जिन्होंने छोड़ा नहीं परमेश्वर ने उनकी सहायता की थी'' (रोमियों 15:4; JB)। हम परमेश्वर के विश्वास योग्य लोगों को आशीष देने और ''प्रोत्साहन'' पाने के विषय में पढ़ सकते हैं। परिणामस्वरूप, चाहे जो भी जो जाए हम भरोसे और ''आशा'' के साथ भविष्य की ओर देख सकते हैं।

सो हम मिलकर आराधना कर सकते हैं (आयतें 5, 6)

5 और 6 आयतों में पौलुस ने एकता के लिए इस प्रार्थना को जोड़ दिया: ''और धीरज, और शान्ति का दाता परमेश्वर तुम्हें यह वरदान दे,[11] कि मसीह यीशु के अनुसार आपस में एक मन रहो, ताकि तुम एक मन और एक मन होकर हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता परमेश्वर की बड़ाई करो।'' प्रार्थना ''धीरज और शांति को दाता परमेश्वर'' (आयत 5क) के हवाले से आरम्भ होती है। परमेश्वर कई प्रकार से हमें धीरज और शान्ति देने में सहायता करता है; परन्तु संदर्भ में पौलुस परमेश्वर के हमें पवित्र शास्त्र के द्वारा धीरज और शांति देने की बात कर रहा था।

पौलुस ने प्रार्थना की कि परमेश्वर जिसने उसके पाठकों को आशीष दी थी, उन्हें भी प्रदान करे कि वह ''आपस में एक मन'' हों (आयत 5ख)। NIV में है ''परमेश्वर तुम्हें अपने बीच में एकता की आत्मा दे।'' RSV में है ''परमेश्वर एक-दूसरे के साथ मिल-जुलकर[12] रहने के लिए तुम्हें शक्ति दे।'' परमेश्वर की इच्छा है कि हम हृदय और मन से एक हों।

जब पौलुस ने ''एक मन होने'' की बात की तो उसके कहने का अर्थ क्या था? इस वाक्यांश का अर्थ उन्हीं बातों पर विश्वास करना और सिखाना (एक अच्छा प्रयास; देखें इफिसियों 4:4-6) हो सकता है परन्तु याद रखें कि पौलुस अभी भी विचार के मामलों की चर्चा कर रहा था। इस वचन में यह प्रेरित मसीही लोगों से अनावश्यक मुद्दों पर *असहमतियों* के बावजूद ''आपस में एक मन'' रहने को कह रहा था। हमें इससे सबक लेना चाहिए कि हमारा ''एक मन होने'' के लिए *हर बात* पर सहमत होना आवश्यक नहीं है। वास्तव में यदि हमें हर बात पर सहमत होना पड़े तो एकता होना सम्भव नहीं है। (मैंने ऐसा कोई समूह नहीं देखा है, जिसमें विचार की भिन्नताएं न पाई जाती हों।)

हम ''आपस में एक मन'' *कैसे* हो सकते हैं (आयत 5; KJV)? यीशु के पदचिह्नों पर चलकर। आयत 5ग में ''मसीह यीशु के अनुसार'' शब्द मिलते हैं। इस वाक्यांश के ''मसीह यीशु [की शिक्षाओं] के अनुसार'' या ''मसीह यीशु [की इच्छा] के अनुसार'' कई अर्थ हो सकते हैं

(देखें यूहन्ना 17:20-23)। मेरी प्राथमिकता ''मसीह यीशु [के उदाहरण] के अनुसार'' है। ''एक मन'' होने का ढंग हम सब के लिए यीशु के नमूने को मानना है, जिसे अपने आपको प्रसन्न करने से अधिक दूसरों को प्रसन्न करने की चिन्ता अधिक थी।

''एक मन'' होने का महत्व *क्यों* है? इस पर प्रार्थनापूर्वक विचार करें: ''ताकि तुम एक मन और एक मन होकर हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता परमेश्वर की बड़ाई करो'' (रोमियों 15:6)। NEB में है ''ताकि तुम एक मन और एक स्वरूप होकर परमेश्वर और हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा कर सको।'' एक होना वैसे आराधना करने के लिए आवश्यक है जैसे हमें करनी चाहिए। आराधना करने वालों के हृदयों में विरोध से बढ़कर आराधना को और कोई चीज़ खराब नहीं कर सकती।

''एक मन से'' परमेश्वर की महिमा करने के बारे में पढ़ते हुए मेरे ध्यान में ''एक मन'' शब्द आया (आयत 5; RSV)। जब मैं हाई स्कूल में था तो मैंने बजाने वालों के दल में ऊंची आवाज़ में गाया। जब हमारी आवाज़ें मिल गईं और हम एक आवाज़ में गाने लगे, तो सुनने वालों को अच्छा लगा। अफ़सोस वर्ष के अन्त में राजकीय प्रतियोगिता में, हम में से एक ने सुर के बाहर गाया। (क्या वह मैं था? मुझे नहीं मालूम।) एक मन होने के बजाय इसमें गड़बड़ थी। कानों को अच्छा लगने वाला होने के बजाय हमारी पेशकश कानों में बजने वाली और सिर दर्द लगाने वाली थी। जब हम साथी मसीही लोगों के प्रति अपने मनों में शत्रुता के साथ परमेश्वर की आराधना करने आते हैं तो निश्चित रूप से हमारे मन का एक न होना परमेश्वर को उतना ही बुरा लगता है जितना एक सुर में न गाने से कानों को।

7 से 13 आयतों में जाने से पहले मैं ज़ोर देना चाहता हूं कि पौलुस ने किस प्रकार माना कि मण्डली में विचार की भिन्नताओं से निपटा जाना चाहिए। आज कई लोगों का मत है कि जब दो मसीही लोग बुरी तरह से असहमत हों, तो उसे हल करने का एकमात्र ढंग वही है जिसे डेल हार्टमैन ने ''भौगोलिक हल'' कहा है: ''यदि मेरी बात नहीं मानी जाती तो मैं चलता हूं।''[13] मैं रोम में यह प्रस्ताव देते हुए किसी की कल्पना कर सकता हूं, ''हम मांस खाने और दिनों को मनाने की बात पर सहमत नहीं हैं, इसलिए साथ-साथ चलना गुटों को बढ़ावा देना है। क्यों न ऐसा करें कि मांस खाने वाली मण्डली अलग हो जाए और मांस न खाने वाली मण्डली अलग? हम दिनों को मानने वाली मण्डली और दिनों को न मानने वाली मण्डली भी बना सकते हैं।'' पौलुस का समाधान यह *नहीं* था। मसीही लोगों के लिए उसका समाधान विचार की भिन्नताओं के बावजूद साथ चलना सीखना, अपने आप को प्रसन्न करने के बजाय दूसरों को ''प्रसन्न'' करना सीखना था। फिर ''*एक* मन'' से हम ''परमेश्वर की महिमा'' कर सकते हैं!

दूसरों को ग्रहण करें (15:7-13)

क्योंकि मसीह ने ऐसा ही किया (आयत 7)

चर्चा के आरम्भ में पौलुस ने ''बलवानों'' को कहा कि ''जो विश्वास में निर्बल है, उसे अपनी संगति में ले लो'' (14:1)। यहां उसने *सब* मसीही लोगों से ''एक-दूसरे को ग्रहण'' करने को कहा (15:7क)। जैसा कि पहले देखा गया था, ''ग्रहण करना'' ''पूरे मन से ग्रहण करना''

का सुझाव देता है।[14] जो लूका 15 में पिता द्वारा अपने पुत्र के स्वागत की तरह है। (उड़ाऊ पुत्र यदि अपने पिता के बजाय रास्ते में अपने बड़े भाई से मिल जाता तो क्या होना था? हो सकता है कि उसे वापस मुड़कर फिर से सूअरों के बाड़े में जाना पड़ता। क्या आप और मैं साथी मसीही लोगों को ''बड़े भाई वाला स्वागत'' देने के दोषी रहे हैं?)

दूसरों को ग्रहण करना सीखना यीशु के पदचिह्नों पर चलने का एक आवश्यक भाग है। पौलुस ने कहा, ''जैसा मसीह ने भी तुम्हें ग्रहण किया है, वैसे ही तुम भी एक-दूसरे को ग्रहण करो''[15] (आयत 7क, ग)। यीशु ने हमें हमारी सारी त्रुटियों और कमियों के साथ ग्रहण किया है। ऐसा उसने यह दिखाते हुए कि परमेश्वर कितना अनुग्रहकारी है (देखें आयत 9) ''परमेश्वर की महिमा के लिए'' किया (आयत 7ख)। उसी प्रकार जब आप और मैं एक-दूसरे को ग्रहण करते हैं तो यह परमेश्वर की महिमा के लिए होता है। इसमें पाए जाने वाले निष्कर्ष पर विचार करें कि यदि हम एक-दूसरे को ग्रहण *नहीं* करेंगे तो इससे परमेश्वर की महिमा *नहीं* होगी।

क्योंकि यही परमेश्वर की इच्छा है (आयतें 8-11)

जब पौलुस ने कहा, ''*हमें* ग्रहण किया है,'' तो वह यहूदियों और अन्यजातियों के ग्रहण किए जाने की बात कर रहा था: ''मैं कहता हूं, कि ... मसीह, परमेश्वर की सच्चाई का प्रमाण देने के लिए खतना किए हुए [यहूदी] लोगों का सेवक बना। ... और *अन्यजाति* भी दया के कारण परमेश्वर की बड़ाई करें'' (आयतें 8, 9क)। एक-दूसरे को ग्रहण करने की इस निरन्तर चर्चा में पौलुस ने अब ''बलवान'' और ''निर्बल'' की बात नहीं की, बल्कि उसकी जगह उसने यहूदियों और अन्यजातियों कहा। किसी विशेष मुद्दे पर चाहे जो भी समूह ''बलवान'' था और जो भी ''निर्बल'' था, वह चाहता था कि वे एक-दूसरे को ग्रहण करना सीखें। 8 से 11 आयतों में उसने साबित किया कि उनके लिए ऐसा करने की परमेश्वर की इच्छा है।

पौलुस ने पहले यहूदियों के ग्रहण किए जाने की बात की: ''मैं कहता हूं, कि मसीह, खतना किए हुओं का सेवक बना'' (आयत 8)। ''मनुष्य का पुत्र इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, परन्तु इसलिए आया कि आप सेवा टहल करे'' (मत्ती 20:28क)। पृथ्वी की उसकी सेवकाई अपने साथी यहूदियों पर केन्द्रित थी (मत्ती 10:5)। यह सेवकाई ''परमेश्वर की सच्चाई के प्रमाण [*huper*] पर थी'' (रोमियों 15:8ख) यानी यह दिखाने के लिए कि परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं सच्ची हैं।[16] यीशु ''जो प्रतिज्ञाएं बाप दादों [अब्राहम, इसहाक और याकूब] को दी गई थीं, उन्हें [पूरा करके] दृढ़ करने के लिए आया।''

फिर पौलुस अन्यजातियों के स्वीकार किए जाने की ओर मुड़ा। पृथ्वी पर यीशु के आने का एक और उद्देश्य ''दया के कारण अन्यजातियों से परमेश्वर की महिमा करवाना'' था (आयत 9क)। अन्यजातियों को यहूदियों की तरह लिखित प्रतिज्ञाएं नहीं दी गई थीं; तौ भी परमेश्वर ने उन्हें अपने अनुग्रहकारी प्रबन्ध में शामिल किया। ''उसके अनुग्रह के लिए परमेश्वर की महिमा करने'' के लिए उनके पास कई कारण थे।

फिर पौलुस ने यह दिखाने के लिए कि परमेश्वर की मंशा हमेशा से यह रही है कि यहूदी और अन्यजाति मिलकर ''एक मन'' हों और ''परमेश्वर की महिमा करें'' पुराने नियम की चार आयतें उद्धृत कीं[17]। उसने भजन संहिता 18:49 से उद्धृत करते हुए आरम्भ किया,[18] जो अन्यजातियों

के रूप में एक यहूदी के परमेश्वर की महिमा करने को दिखाता है: ''जैसा लिखा है; कि इसलिए मैं जाति-जाति में तेरा धन्यवाद करूंगा, और तेरे नाम के भजन गाऊंगा[19]'' (रोमियों 15:9ख)।

फिर उसने व्यवस्थाविवरण 32:43 से उद्धृत किया, जहां मूसा ने अन्यजातियों को यहूदियों के साथ आनन्द करते हुए दिखाया था: ''फिर कहता है, हे जाति-जाति के सब लोगो, उस की प्रजा के साथ आनन्द करो'' (रोमियों 15:10)। अगली आयत भजन संहिता 117:1 है जो यहूदियों और अन्यजातियों सब से परमेश्वर की महिमा करने को कहती है: ''हे जाति-जाति के लोगो, प्रभु की स्तुति करो: और हे राज्य-राज्य के सब लोगो: उसे सराहो[20]'' (रोमियों 15:11)।

अन्तिम उद्धहरण यशायाह 11:10 है, जो एक यहूदी की बात करती है जिसने अन्यजातियों पर शासन करके उन्हें आशीष देनी थी: ''और फिर यशायाह[21] कहता है, कि यिशै की एक जड़ प्रकट होगी, और अन्यजातियों का हाकिम होने के लिए एक उठेगा, उस पर अन्यजातियां आशा रखेंगी'' (रोमियों 15:12)। यशायाह और पौलुस द्वारा इस्तेमाल करने से ''यिशै की जड़'' वाक्यांश का अर्थ ''जो यिशै में से फूट निकलता है, अर्थात जिसका मूल यिशै है।''[22] यिशै राजा दाऊद का पिता था (1 शमुएल 16:5-13; मत्ती 1:6), जो यीशु का यहूदी पूर्वज था (मत्ती 1:1; 21:9)। यीशु विश्वास करने वाले यहूदियों का मसीहा होने के साथ-साथ विश्वास करने वाले अन्यजातियों का प्रभु भी है। मसीह ही है जिस *में* आशा है।

''पौलुस ने पवित्र शास्त्र को हर तर्क के अन्त के रूप में देखा।''[23] यहूदियों ने अपने धर्म शास्त्र को तीन भागों में बांटा था: व्यवस्था (तौरेत), भविष्यवक्ता और लेख। पौलुस के उद्धरणों में से एक व्यवस्था में से था (व्यवस्थाविवरण 32), एक भविष्यवक्ताओं में था (यशायाह 11) और दो लेखों में थे (भजन संहिता 18 और 117)। स्रोतों की इस विभिन्नता का इस्तेमाल करते हुए, प्रेरित ने इस बात पर ज़ोर दिया कि *प्रत्येक* पवित्र शास्त्र यहूदियों और अन्यजातियों *दोनों* के लिए परमेश्वर की स्वीकृति की पुष्टि करता है। इसलिए मसीही यहूदियों को मसीही अन्यजातियों को ग्रहण करना और मसीही अन्यजातियों को मसीही यहूदियों को ग्रहण करना अवश्यक था।

कि परमेश्वर हमें आशीष दे (आयतें 12, 13)

यह चर्चा एक प्रार्थना भरी इच्छा के साथ समाप्त होती है। पौलुस ने अपने उद्धरण को यशायाह के शब्दों से समाप्त किया ''उस पर अन्यजातियां आशा रखेंगी'' (आयत 12)। फिर ''आशा'' शब्द को अलग करते हुए उसने कहा, ''परमेश्वर जो आशा का दाता है, तुम्हें विश्वास करने में सब प्रकार के आनन्द और शांति से परिपूर्ण करे, कि पवित्र आत्मा की सामर्थ से तुम्हारी आशा बढ़ती जाए'' (आयत 13)।

14:17 में पौलुस ने अपने पाठकों से अपनी प्राथमिकताएं ठीक करने का आग्रह किया था। उसने कहा कि ''परमेश्वर का राज्य खाना-पीना नहीं, परन्तु धर्म और *मेल-मिलाप* और वह *आनन्द* है जो *पवित्र आत्मा* से होता है।'' 14:17 के कई मुख्य शब्द 15:13 में सुनाई देते हैं: ''परमेश्वर ... तुम्हें विश्वास करने में सब प्रकार के *आनन्द* और *शान्ति* से परिपूर्ण करे, कि *पवित्र आत्मा* की सामर्थ से तुम्हारी आशा बढ़ती जाए।'' पौलुस ने यह प्रार्थना नहीं की कि उसके पाठक विचार की हर भिन्नता को हल कर दें, बल्कि यह कि अधिक महत्वपूर्ण ढंगों से अर्थात आनन्द, शान्ति और आशा से आशीष मिले।

इसके अलावा उसने प्रार्थना की कि "*आशा* ... से परिपूर्ण" हों। "परिपूर्ण" (*perisseuo*) का अनुवाद *perisseia* के क्रिया रूप से किया गया है जिसका अर्थ "*अत्यधिक* माप, सामान्य से बढ़कर" है।[24] AB में है "तुम आशा से भरे और उमड़ते (बुदबुदाते) रहो।"

फिर पौलुस ने ईश्वरीय और मानवीय दोनों पर ज़ोर दिया। उसने संकेत दिया कि *विश्वास* के द्वारा कार्य करके उसकी प्रार्थना का उत्तर *परमेश्वर की सामर्थ* के द्वारा दिया जाएगा। पहले उसने विश्वास की बात की: "परमेश्वर ... तुम्हें *विश्वास करने में* सब प्रकार के आनन्द और शांति से परिपूर्ण करे।" आर. सी. बेल्ल ने लिखा है, "सब कुछ 'विश्वास करने,' अर्थात गहरे, ठोस ग्रेनाइट पत्थर पर निर्भर है, जिस पर मसीहियत का मानवीय पहलू टिका है। 'विश्वास करने वाले के लिए सब-कुछ हो सकता है' [मरकुस 9:23], परन्तु विश्वास न करने तक कुछ भी होना सम्भव नहीं है।"[25] फिर पौलुस ने परमेश्वर पर ज़ोर देने के साथ समाप्त किया: "पवित्र आत्मा की सामर्थ से" यानी परमेश्वर के आत्मा के द्वारा जो मसीही लोगों में वास करता और उन्हें सामर्थ देता है (रोमियों 8:9, 26)। परमेश्वर की सहायता से हम इस जीवन में आनन्द और शान्ति तथा कल के लिए आशा पा *सकते* हैं।

सारांश

"यीशु के पदचिह्नों पर चलें।"[26] यह हमेशा आसान नहीं है। अपने मन में मैं बर्फ के बीच में से अपने पिता के पीछे-पीछें चलते, अपने पिता के कदमों के निशान पर अपनी टांगे फैलाते हुए एक छोटे लड़के की कल्पना करता हूं। यदि हम यीशु के पदचिह्नों पर चलने का प्रयास करें और टांगें फैलाएं, तो हम इसके लिए बेहतर होंगे। हमारे आस-पास के लोग इसके लिए बेहतर हों और प्रभु की कलीसिया इसके लिए बेहतर होगी।

प्रचारकों तथा सिखाने वालों के लिए नोट्स

यदि आप इस पाठ के अन्त में मसीही बनने का प्रभु का निमन्त्रण दें तो आप ध्यान दिला सकते हैं कि बपतिस्मा लेने के लिए यीशु कई मील तक चला (देखें मत्ती 3:13; जहां यूहन्ना बपतिस्मा देता था, वह जगह गलील से काफ़ी दूर थी)। यदि आपके सुनने वाले यीशु के पदचिह्नों पर चलना चाहते हैं, तो पहले वे बपतिस्मे के पानी में उसके पीछे चलें।

इस पाठ का एक वैकल्पिक शीर्षक है "एकता के लिए विनती।" हमारे वचन पाठ में पाठ के विषय के रूप में कई बातों पर ज़ोर दिया जा सकता है। आराधना करने और परमेश्वर की स्तुति करने (आयतें 6, 9-11) और आशा पर ज़ोर है[27] (आयतें 4,12, 13)।

टिप्पणियां

[1]चार्ल्स शैल्डन, *इन हिज़ स्टैप्स* (पृष्ठ नहीं, 1896; रिप्रिंट, नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1935). [2]अमेरिका में नवयुवक जो शैल्डन की पुस्तक के बारे में थोड़ा जानते हैं या बिल्कुल नहीं जानते, वे हाल ही के "W-W-J-D" "What Would Jesus Do?" धुन के बारे में अवश्य जानते हैं। यदि आपके सुनने वाले "W-W-J-D" से परिचित हैं तो आप इसका इस्तेमाल उदाहरण के रूप में कर सकते हैं। [3]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ़. अंगर, एंड विलियम व्हाइट,

जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एंड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 455. [4]KJV में उन आयतों में "देनदार" है। [5]वाइन, 52. [6]पौलुस ने शायद यह संकेत देने के लिए कि यहां के नियमों की विचाराधीन मुद्दे से व्यापक प्रासंगिकता हो सकती है, सामान्य शब्द "पड़ोसी" का इस्तेमाल किया। [7]पौलुस ने यहां यह नहीं समझाया कि "निर्बल" भाई को *कैसे* "सुधारना" (बनाना) है। एक आवश्यक बात उसकी समझ बढ़ने के साथ उसे धीरज और प्रेम से निर्देश देना है। [8]आरम्भिक मसीही लोग भजन संहिता 69 को मसीहा से जुड़ा भजन मानते थे। (मत्ती 27:34; यूहन्ना 2:17; 15:25; प्रेरितों 1:20; और रोमियों 11:9, 10 में इसे उद्धृत किया गया है।) [9]चार्ल्स हॉज, *रोमन्स,* दि क्रॉसवे क्लासिक कमैंट्रीज़ (व्हीटन, इलिनोइस: क्रॉसवे बुक्स, 1993), 378 से लिया गया। [10]इस पुस्तक में आए पाठ "पुराने नियम का मसीही व्यक्ति को लाभ (रोमियों 15:4)" का अतिरिक्त पाठ देखें।

[11]यूनानी धर्मशास्त्र में केवल "परमेश्वर का धीरज और प्रोत्साहन" है। यह परमेश्वर की विशेषताओं की बात हो सकता है (परमेश्वर जो धीरज रखता और प्रोत्साहित करता है), परन्तु संदर्भ इस विचार से अधिक मेल खाता है कि ये वे आशिषें हैं जो परमेश्वर हमें देता है। [12]AB और MSG में भी आयत 15ख में "मेल" शब्द का इस्तेमाल है। [13]ईस्ट साइड चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, मिडवेस्ट सिटी, ओक्लाहोमा, 28 मार्च 2004 को झगड़े का निपटारा पर डेल हार्टमन का प्रवचन। [14]लियोन मौरिस, *दि एपिस्टल टू द रोमन्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 502. [15]कई अनुवादों में "हम" की जगह "तुम" है। ब्रूस मैज़गर ने लिखा है, "[*humas*, बहुवचन "तुम"] पढ़ना, जिसे [*hemas*, "हम"] पढ़ने से बेहतर और अधिक अलग-अलग समर्थ है, संदर्भ में मध्यम पुरुष बहुवचन की अन्य घटनाओं से मेल खाता है (आयतें 5-7)।" (ब्रूस मैज़गर, *ए टैक्सचुअल कमैंट्री ऑन द ग्रीक न्यू टैस्टामेंट,* द्वितीय संस्करण [न्यू यॉर्क: यूनाइटेड बाइबल सोसायटीज़, 2000], 473)। वचन का अर्थ मुख्यतया वही रहता है चाहे "हम" का इस्तेमाल करें या "तुम" का। [16]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचरल,* द्वितीय संस्करण, संशो. विलियम एफ़ अर्डंट एंड विल्बर गिंगरिच (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 1957), 846. [17]अधिकतर भाग के लिए, वचन पुराने नियम के यूनानी अनुवाद (सप्तति) से लिए गए हैं। आपको यह समझने के लिए कि मूल में उनका इस्तेमाल कैसे हुआ, पुराने नियम की आयतों के संदर्भ में पढ़ना पड़ेगा। [18]2 शमुएल 22:50 भी देखें। [19]*Psallo* से लिया गया है, जिसका "[नये नियम] में का अर्थ स्तुति गाना" है (*दि एनेलिटिकल ग्रीक लैक्सिकन* [लंदन: सेमुएल बैगस्टर एंड सन्स, 1971], 441)। [20]"स्तुति" की जगह कई अनुवादों में "स्तुति गाओ" या कुछ ऐसा है (NIV; JB; NCV)।

[21]KJV में "इसायास" है, जो इब्रानी नाम "इसायाह" का यूनानी संस्करण है। [22]मौरिस, 506. [23]जिम मैक्गुइगन, *दि बुक ऑफ़ रोमन्स,* लुकिंग इन टू द बाइबल सीरीज़ (लब्बॉक, टैक्ससः मोंटैक्स पब्लिशिंग कं., 1982), 419. [24]वाइन, 5-6. [25]आर. सी. बेल्ल, *स्टडीज़ इन रोमन्स* (ऑस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1957), 176. [26]आप यहां रुककर पाठ की मुख्य सच्चाइयों की समीक्षा कर सकते हैं। [27]*रोमियों, 2* पुस्तक में "आशा से जीवित रहना (8:17-25)" पाठ की समीक्षा करें।